

साइबेरियन क्रेन, फ्लेमिंगो और ग्रेट व्हाइट पेलकिन

स्रोत: डाउन टू अर्थ

साइबेरियाई सारस और फ्लेमिंगो के साथ-साथ, ग्रेट व्हाइट पेलकिन भी आवास वनाश के कारण भारतीय आर्द्रभूमि से तेज़ी से दूर जा रहे हैं।

- ये पक्षी मुख्य रूप से यूरोप, पश्चिम एशिया और अफ्रीका के कुछ हिस्सों में रहते हैं तथा अधिक सर्दियों के दौरान गर्मी के लिये भारत की ओर प्रवास करते हैं।

प्रजातियाँ	परिचय	संरक्षण स्थिति
साइबेरियाई क्रेन	<ul style="list-style-type: none"> यह प्रजाति ज़्यादातर पूर्वी एशिया में पाई जाती है, तथा पश्चिमी और मध्य क्षेत्रों में इनकी संख्या कम है। 	IUCN स्थिति: गंभीर संकटग्रस्त (CR) CITES: परशिष्टि I
फ्लेमिंगो	<ul style="list-style-type: none"> अपने चमकीले गुलाबी पंखों के लिये जाने जाने वाले फ्लेमिंगो के पैर और गर्दन की लंबाई अधिक होती है। 	IUCN स्थिति: संवेदनशील: एंडियन फ्लेमिंगो निकट संकटापन्न: एंडीन फ्लेमिंगो, पुना फ्लेमिंगो, और चिली फ्लेमिंगो सीआईटीईएस: परशिष्टि II
ग्रेट व्हाइट पेलकिन	<ul style="list-style-type: none"> वयस्क नर मादा से बड़ा होता है। नर पेलकिन की आँखों के चारों ओर एक गुलाबी धब्बा होता है। 	IUCN स्थिति: कम चिंताजनक

- प्रवासन से संबंधित चुनौतियाँ:
 - आवास का वनाश: आर्द्रभूमि का प्रदूषण और अतिक्रमण उनके प्रवास में बाधा उत्पन्न करता है।
 - जलवायु परिवर्तन: बढ़ते तापमान से उनके शीतकालीन पैटर्न पर असर पड़ता है।
 - एंटीबायोटिक प्रदूषण: खाद्य जाल में एंटीबायोटिक्स का उत्सर्जन भी इन सुंदर सफेद पक्षियों के प्राकृतिक आवासों को बाधित कर रहा है।

और पढ़ें: [आर्द्रभूमि](#)